17 / 12 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

अमृत वेला रुपी मानसरोवर डुबकी लगा सर्व खजानों के मालिक पन का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा होली हंस हूं

➳ _ ➳ सदा ज्ञान रत्नों के मनन और उनकी धारणा में मगन हूँ

→ अमृतवेले अपनी धारणा शक्ति से

→ बाप की प्रेरणाओं को कैच कर रही हूँ

- मैं धारणामूर्त आत्मा
- मैं अनुभवी मूर्त आत्मा
- भोले भंडारी बाप से
- स्नेह स्वरूप बन
  - सर्व खजानों से झोली भर रही हूँ
  - सर्व संबंधो का अनुभव कर रही हूँ

➳ _ ➳ बाप दादा की झील सी गहरी आँखों से टपकता स्नेह रुपी अमृत

➳ _ ➳ मुझ आत्मा को अशरीरी बना रहा हैं

→ मैं आत्मा फ़रिश्ता स्वरूप धारण कर

→ फरिश्तों के लोक में

→ मैं होलीहंस आत्मा सामने देख रही हूँ

→ एक सुन्दर मानसरोवर

→ अमृत वेला रुपी मानसरोवर

→ मानसरोवर में अनेक रंगों की सुन्दर लहरें

- ज्ञान की सुरमई नीली लहरें
- पवित्रता की नारंगी लहरे
- सुख शांति की लहरे
- आनंद की लहरें
- शक्तियों की लहरें
  - लहरों में डूबकियां लगाती
  - होलीहंसों की टोलियाँ और
  - इन सबके साथ, मैं होलीहंस आत्मा
  - ज्ञान रत्नों को चुगती
  - ग्रहण करती
  - सर्व प्राप्ति स्वरूप बन रही हूँ

→ सरोवर के ठीक ऊपर झिलमिल करते ज्ञान सूर्य

→ साथ में ढूधियाँ चांदनी बरसाते ज्ञान चंद्रमा

→ मुझ आत्मा को सर्व वरदानो से भरपूर कर रहे है

→ एक एक सेकेण्ड का अनुभव

→ दिन और रात की प्राप्ति का आधार बन रहा हैं

→ बाप दादा भोला भंडारी बन

- हर बात सुन रहा हैं
- हर फ़रियाद सुन रहा है
- हर कमजोरी मिटा रहा हैं
- हर प्रश्न से पार ले जा रहा हैं
- हर पाप बख्श रहा हैं
- मुझ पर बेपनाह प्यार लुटा रहा हैं

◆ आलस्य और अल बेले पन से दूर कर

◆ मुझे मायाजीत बना रहा हैं

● मैं आत्मा मेहनत से मुक्त हूँ

● माया के साइड सीन को परख

● खुले भंडारों से

● प्रारब्ध की झोली भर रही हूँ

● बापदादा की दिलतख़्तनशीं

● दिलखुश आत्मा हूँ

➳ _ ➳ अब होली हंस मैं आत्मा उड़ चली परमधाम की ओर

→ ज्ञान सूर्य की किरणों के नीचे मैं आत्मा

◆ कल्प वृक्ष की सभी ब्राह्मण आत्माओं को

● अमृत वेला रुपी मानसरोवर में

● डुबकी लगा

● सर्व प्राप्तियों की अनुभवी बना रही हूँ